PEER-REVIEWED REFEREED JOURNAL
ISSN 2231-0479-SAMAGAM
RNI MPHIN/2000/02531
Po.Reg. MP/BPL/4-188/2021-24

दिसम्बर-2023 मूल्य पचास रुपये 15 तारीख को प्रकाशित पृष्ठ संख्या 48

समागम

शोध एवं संदर्भ की अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

चुनाव घोषणा पत्र क्या होता है

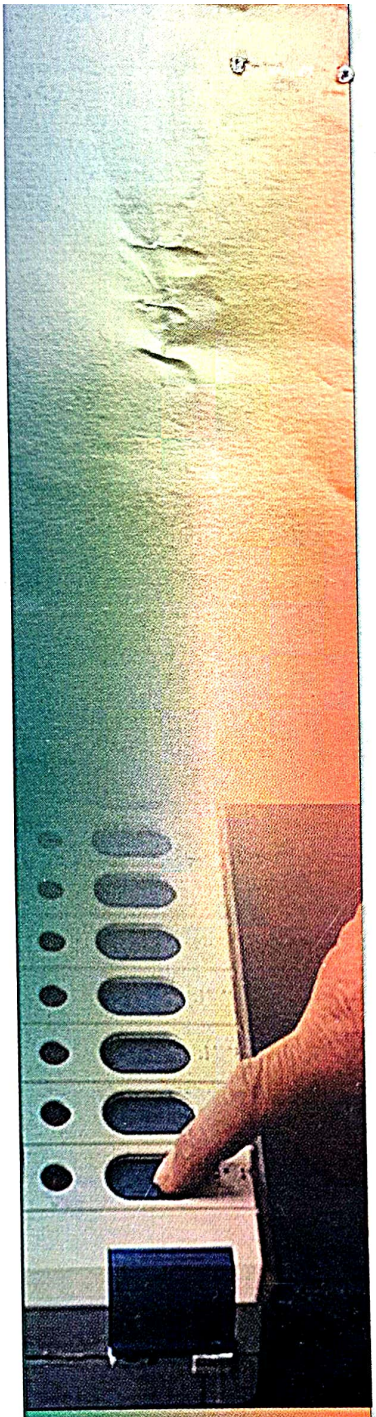

आदर्श चुनाव आचार संहिता क्या है

ISSN 2231-0479

समागम

peer-reviewed (refereed) journal | http://samagamresearchjournal.com

वर्ष-23 /अंक-10/नवम्बर-2023 | क्वान्तोंग(भारत अध्ययन) विश्वविद्यालय, चीन से हिन्दी जर्नल के रूप में 'समागम' को मान्यता प्राप्त

भीतर के पन्नों पर

हस्तक्षेप 5-6

- एक देश, एक चुनाव : इस पहल से बदलेगी दिशा-दृष्टि

विमर्श : गांधी 7-11

- चुनावी घोषणा -पत्र क्या है ?
- क्या होती है आदर्श चुनाव आचार संहिता/**कृष्णकांत शुक्ला**
- सक्रिय सहभागिता से ही लोकतंत्र मजबूत होगा-राजन

स्मृति शेष-पं. नेहरू 12-13

- नेहरू का लोकनायकत्व/**विनोद साव**

शोध विमर्श 14-46

- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पत्रकारिता एवं मुद्रित माध्यम/**सत्यवती राठौर**
- राष्ट्रीय-सांस्कृतिक आंदोलन में हिन्दी कथाकार 'भोजपुरी' का योगदान/**सियाराम मुखिया**
- रविदास के /समन्वयवादी विचार/**लक्ष्मी कस्तुरे**
- नेपाली की कविताओं में प्रेम: विशद अध्ययन/ **डॉ. दिवाकर चौधरी**
- लिंग संवेदीकरण में शिक्षा की भूमिका/**डॉ. कंचन कुमारी**
- मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में चित्रित समस्याएं/**डॉ. रोसी पी. वर्गीस**
- उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएं/**डॉ. सनु तोमस**
- शिवमूर्ति की कहानी 'तिरिया चरितर' में स्त्री दर्द का विवेचन/**तनुजा**
- 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध की समीक्षात्मक अध्ययन/**डॉ. धनंजय कुमार**
- Impact of spiritual chanting on mental health/**Radha Krishna Veni kunisetti, Dr. Suneetha kandi**

मनोज कुमार
सम्पादक

प्रो. (डॉ.) विशाला शर्मा
सहयोगी सम्पादक

विषय-विशेषज्ञ

प्रोफेसर के.जी. सुरेश कुलपति, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल

गिरिजाशंकर वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक, भोपाल

जगदीश उपासने अध्यक्ष, प्रसार भारती भर्ती बोर्ड, भारत सरकार

प्रो. (डॉ.) सुधीर गव्हाणे पूर्व कुलपति, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र

प्रो. (डॉ.) च्यांग चिंग खुई विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, बीजिंग विश्वविद्यालय, चीन

विवेक मणि त्रिपाठी असिस्टेंट प्रोफेसर (भारत अध्ययन) क्वान्तोंग विदेशी भाषा विश्वविद्यालय,चीन

डॉ. सोनाली नरगुंदे विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

डॉ. गोविंद बुरसे विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग, शिवाजी महाविद्यालय, कन्नड़, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

डॉ. सरोज चक्रधर
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी शासकीय नवीन कन्या महाविद्यालय, गोबरा नवापारा, रायपुर, छग

डॉ. आरफा राजपूत एसोसिएट प्रोफेसर, सिनेमा संकाय जी फिल्म स्कूल, नोएडा,यूपी

आकल्पन : अपूर्वा
दत्ता कोल्हारे
सहयोगी समन्वयक (अवैतनिक)

सदस्यता : वार्षिक सदस्यता (व्यक्तिगत) : 6 सौ रुपये मात्र ▸ वार्षिक सदस्यता (संस्थागत) : 2 हजार रुपये मात्र (पंजीकृत डाक से)

सम्पर्क : 3,जूनियर एमआयजी, द्वितीय तल, अंकुर कॉलोनी, शिवाजीनगर,भोपाल-(मप्र)462016 E-mail:samagam2016@gmail.com

3 स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक कृति अग्रवाल द्वारा 3, जू. एमआईजी, द्वितीय तल, अंकुर कॉलोनी, शिवाजीनगर, भोपाल से प्रकाशित एवं तारा ऑफसेट प्रिंटर्स, शॉप नं.-4, जोन वन एमपी नगर भोपाल से मुद्रित. *सम्पादक- मनोज कुमार*अवैतनिक मानसेवी . प्रकाशित सामग्री के लिए सहमति अनिवार्य नहीं. विषय विशेषज्ञ अवैतनिक एवं समस्त वैधानिक जवाबदेही से मुक्त

शोध विमर्श

नेपाली की कविताओं में प्रेम: विशद अध्ययन

डॉ. दिवाकर चौधरी
सहायक प्राध्यापक-हिन्दी
श्री राधाकृष्ण गोयनका महाविद्यालय,सीतामढ़ी,बिहार

शोध सार : गोपाल सिंह नेपाली छायावादोत्तरकालीन मस्ती, यौवन और प्रेम प्रधान गीतिकाव्य-धारा के प्रधान हस्ताक्षर के रूप में हिन्दी साहित्य में लब्धप्रतिष्ठित हैं। इनकी काव्य-संवेदना के मूल में प्रेम और प्रकृति है। इन्होंने अपनी सहज अभिव्यक्ति से आधुनिक हिन्दी-कविता को एक नयी गीति-भंगिमा दी। इनकी कविता उमंग, प्रेम और सौंदर्य की कविता है, जीवन से जुड़ाव की कविता है। इसलिए उसमें पलायन का भाव नहीं, मस्ती और जोश के स्वर हैं तथा प्रेम के गीत हैं। प्रेम को नेपालीजी ने श्रेष्ठतम दर्जा दिया है और उसकी महिमा का उद्घोष किया है-

'जीवन में क्षण-क्षण कोलाहल,ज्यों सुख त्यों दुख,सुख-दुःख समान
आती संध्या जाता विहान, जाती संध्या आता विहान
इसलिए जगत में दो ही तो कुछ शांति कभी देने वाले
है एक प्रकृति की मृदुल गोद, दुसरा प्रेम का मधुर गान।।'[1]

शब्द संकेत : छायावाद, यौवन, प्रेम प्रधान, हिन्दी साहित्य, उमंग, सौंदर्य, जीवन।

प्रस्तावना : प्रेम उनके संदर्भ में युवा कवि की भावुकता का उच्छलन नहीं वरन् सम्पूर्ण मानव जाति के लिए उपादेय जीवनदृष्टि है । इसलिये इसकी प्रासंगिकता वर्तमान संदर्भों में और बढ़ जाती है। उनकी दृष्टि में प्रेम जीवन को सर्वांगपूर्ण तो करता ही है, साथ ही संसार-सागर को पार करने का एकमात्र माध्यम भी है -

''तुम समझोगे नंदन वन के
सुन्दर, सरस सुमन सुकुमार
इठला-इठला कर करते हैं
कुछ दिन वन-समीर से प्यार
चातक, मोर, पपीहा, कोयल
अपने जीवन के दिन चार
करते हैं आकर दुनिया में
यही प्रेम का ही व्यापार
किन्तु, देव, कब समझोगे, है
यही स्वर्ग, जीवन, संसार
यही पुण्य है एक जगत का
उतरेंगे इससे ही पार।।''[2]

नेपाली जी का प्रेम-वर्णन बहुआयामी है। उसमें प्रेम के कई रूप मिलते हैं। उसमें प्रकृति-प्रेम भी है, मानव-प्रेम भी, ईश्वरीय-प्रेम या भक्ति भी है ,देश-प्रेम भी, राष्ट्रभाषा प्रेम भी है और संस्कृति-प्रेम भी। प्रकृति-प्रेम नेपाली जी के काव्य की प्रमुख विशेषता मानी जाती रही है ।

वे जानते हैं कि प्रेम मरू की नीरसता में भी सरसता संचरित कर 'नंदनवन' बना सकता है । प्रेम के साहचर्य में सारे अभाव छोटे पर जाते हैं। जीवन का सूनापन दूर हो जाता है,हृदय की

कलियाँ खिल उठती हैं और जीवन का सुख-बाग गुलजार हो उठताहै।

सर्वनाश हो, प्रलय, निधन हो, होकर हमें करेगा क्या
ऐसी बन्दर- घुड़की से मानव हृदय डरेगा क्या
चलने का अभ्यस्त पांव यह पथ से कभी टरेगा क्या
ईश्वर का यह अमर अंश रे छन में कहीं मरेगा क्या
जब तक यह संसार रहेगा तब तक हम अवतार सखी
जहां रहेंगे वहीं बसेगा नंदनवन गुलजार सखी।।'[3]

इसलिए उन्होंने प्रेम को इतना महिमामंडित कर दिया है कि उसके अभाव में यह संसार भी त्याज्य है, ग्रहणीय है -

'वन्दे तरु के पीले पत्ते, जिनमें कुछ रस-धार न हो
वैसे यहां न हों प्रेमी, तो सच कह दूँ, संसार न हो।।'[4]

उनकी नजर में प्रेम ही स्वर्ग है, मुक्ति है, संपदा है। इसके अलावा सारे सांसारिक रिश्ते बंधन हैं, सिर्फ एकमात्र प्रेम ही जीवन है। यह वह 'पारस' है जिसके संस्पर्श मात्र से मानव-शरीर (वासना), कंचन के समान विशुद्ध (वासनारहित) हो जाता है। जीवन की विवशता और कठिनाइयों पर सरसता रूपी सुधा बरसाने वाला एकमात्र 'धन', 'प्रेमधन' है -

''अब समझी मैं यही स्वर्ग है, यही मुक्ति है, धन है,
और जगत में सब बंधन हैं, यही एक जीवन है;
यही एक 'पारस' है, जिससे बनता तन कंचन है,
सरस सुधा बरसाने वाला यही एक बस घन है।।''[5]

इसलिये वे प्रेम की स्वच्छंदता में विश्वास रखते हैं और रस्मों का बहिष्कार करते हैं-

''मन मिला तो जवानी रसम तोड़ दे,
प्यार निभाता न हो तो डगर छोड़ दे
दर्द देकर न कोई बिसारा करे,
मन दुबारा-तिबारा पुकारा करे।।'[6]

उन्हें दुनिया से कोई डर नहीं, वे निर्भीक भाव से कहते हैं -

''डरता न तिमिर से मैं कुछ भी,
कुछ भीति नहीं है बादल से;
बस प्रीति रही जिससे मेरी
उग आय गगन में वही चाँद।।''[7]

नेपालीजी के प्रेम-वर्णन में सिर्फ वायवीयता ही नहीं है अपितु उसमें प्रियतम के रूप का आकर्षण भी है और सम्मोहन भी। प्रियतमा का यह रूप द्रष्टव्य है जिसके सौंदर्य-सागर में कवि की कल्पना का आकाश जैसे डूबने लगता है -

''सुमुखि, तुम्हारे रूप-दीप में भरा हुआ इतना प्रकाश था
चहुँ दिशि छाए अन्धकार से था जीवन में ऊब गया मैं
बही तुम्हारी ज्योतिर्धारा सहसा उसमें डूब गया मैं
जब उतराया मैं तरंग पर मंत्र-मुग्ध हो मैंने देखा
काँप रहे तेरे अधरों पर खेल रहा स्वर्णिम सुहास था
मेरे जीवन की सन्ध्या में तुम झिलमिल तारा बन आईं
मधुर तुम्हारी रूप-सुधा से झूम उठी मेरी परछाईं
किसने मेरे शून्य कक्ष में यह दीपक रख दिया जलाकर
जिसकी ज्योति-लहर में मेरा डूब रहा कल्पनाकाश था।।'[8]

...उसका सौंदर्य जैसे सूर्योदय है, जिसके दर्शन मात्र से कवि का हृदय-कमल खिल उठता (ध्यातव्य है कि कमल सिर्फ सूर्य की रोशनी में ही खिलता है, अत: यहां कवि का अपनी प्रियतमा के प्रति एकनिष्ठ प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है) है-

''सौंदर्य तुम्हारा सूर्योदय, संध्या हो आधी रात हो
दर्शन से खिलता मुग्ध हृदय जैसे कोई जलजात हो।।'[9]

वह 'मृगनयनी' है, उसकी आवाज कोयल की तरह श्रव्य मधुर है, उसकी पलकें घन की श्यामलता को शर्मसार कर देने वाली है, उसके स्वर के समक्ष बांसुरी की तान भी झूठी मालूम होती है -

''मृगनैनी-पिकबैनी ! तेरे सामने बँसुरिया झूठी है
रग-रग में ऐसा रंग भरा रंगीन चुनरिया झूठी है।।''[10]

उसकी सुंदरता कवि को सांसारिक ज्ञान की महिमा से कहीं ज्यादा श्रेष्ठतर प्रतीत होती है, क्योंकि-

''दुनिया देखी पर कुछ न मिला,
तुझको देखा सबकुछ पाया
संसार ज्ञान की महिमा से प्रिय की पहचान
कहीं सुंदर तेरी मुस्कान कहीं सुंदर।।''[11]

''नेपाली ने प्रेम को एक स्वस्थ जीवन-दर्शन के रूप में अंगीकार किया है। नानारूपात्मक जीवन-जगत से पराङ्मुख होकर मुक्ति का अन्वेषण करने वालों से कवि सहमत नहीं हो पाता है। यह गृहस्थिक प्रेम का पक्षधर है, जो मनुष्य को कर्मण्य बनाता है।''[12] इसलिए वे अपने प्यार की स्वीकृति चाहते हैं -

''मैं प्यार मांगता हूँ
मनुहार मांगता हूँ
बस दो युवा-हृदय का
संसार मांगता हूँ ।।''[13]

साथ ही गृहस्थ जीवन की धुरी नारी की महत्ता को स्थापित करने का प्रयास भी करते हैं-

''आधी दुनिया मैं हूँ, आधी तुम हो मेरी रानी !
तुमने हमने मिलकर कर दी पूरी एक कहानी।।''[14]

उनके लिए 'प्रिय' और 'प्राण' जैसे एक ही सूत्र के दो सिरे हैं -

''डोरी के दो मुँह जैसे ही प्राण और तुम एक प्रिय
जग-जीवन यौवन अभिलाषा की मृदु-मृदु उद्रेक प्रिय।।''[15]

नारी उनके लिए सिर्फ वासना का साधन नहीं है, अपितु वह कवि की शक्ति का अजस्र स्रोत भी हैं -

ISSN 2231-0479
peer-reviewed (refereed) journal

''मैं शक्ति तुम्हीं से पाता हूँ
नव ज्योति तुम्हीं से मिलती है।।''[16]

उन्हें नारी में उस जीवन-तथ्य के दर्शन होते हैं जो उन्हें अब तक मंदिरों, तीर्थों आदि में भटकने पर भी नहीं मिला था , । उन्हीं के शब्दों में -

''मंदिर में अर्पण ही अर्पण, तीर्थों में तर्पण ही तर्पण
दर-दर भटका घर-घर अटका, मुझको न मिला जीवन-दर्पण
वह दर्पण चमक उठा बिजली-सी नारी में
मैं प्यार चुराता चला गया अँधियारे में।।''[17]

प्रेम में सिर्फ आनंद ही नहीं दर्द भी अनिवार्यत: होता ही है । नेपालीजी की रचनाओं में भी प्रेम के प्रसाद अर्थात् वियोग को अभिव्यक्ति मिली है। प्रियतम का दिया दर्द इतना सघन है कि-

''दूर तुमने किया, दर्द इतना दिया
हम जहाँ भी रहे गुनगुनाते रहे
दो तुम्हारे नयन, दो हमारे नयन
चार दीपक सदा जगमगाते रहे।।''[18]

प्रेम के दर्द ने ही उन्हें गीतसर्जक बनाया-

''प्यार किया सर्वस्व लुटाया प्रेमी मन को पहचाना
खुशी हुई तो चुप्पी साधी दर्द उठा, सूझा गाना।।''[19]

वे अब प्रेम की वाणी कुछ-कुछ पहचानने लगे हैं। तज्जन्य व्यथा की स्वाभाविक अभिव्यक्ति उनकी वाणी को हृदयस्पर्शी बना देती है। अब वे भी अभिनय कुशल हो गये हैं क्योंकि उन्हें यह ज्ञात हो गया है कि प्रेम की वाणी अंतरतम की वाणी है। इसलिए अपने प्रिय को संबोधित करते हुए कहते हैं -

''भीतर रोना बाहर हँसना, संगिनी,जान गया हूँ मैं
नाच गई काँटों में मीरा झूम-झूम गा गए कबीरा
जग बदला मेरी बारी में गंगा बनी गहन-गंभीरा
इतना है कि प्रेम की वाणी अब पहचान गया हूँ मैं।।''[20]

उनकी प्रेम-दृष्टि व्यापक है । इसीलिए प्रिय से बिछुड़कर भी उनका हृदय हाहाकार नहीं करता वरन् नई जीवन-दृष्टि का उन्मेष करता है और प्रेम के लिए जीवन तक न्योछावर करने को तैयार हो जाता है-

''तुम हो दूर, दूर हूँ मैं भी,
जीने की यह रीति निकालें;
तुम प्रेमी हो, प्रेम पसारो,
मैं प्रेमी हूँ जीवन वारूँ।।''[21]

नेपालीजी प्रेम की सम्पूर्णता के उपासक हैं इसलिए वे प्रिय से 'वसंत' ही नहीं 'पतझड़' में भी आने की गुजारिश करते हैं-

''मधुऋतु में जैसे तुम आए, पतझड़ में भी आना
पीले झरते हुए पात का गाना सुनते जाना।।''[22]

और...-

''हम गाते हैं, इठलाते हैं मुस्काकर प्यार जताते हैं
हैं आज हमारे सुख के दिन हम प्रेमी हैं, मन भाते हैं
किन्तु पड़ेगा जब रोना तब दुख में नहीं रुलाओगे
जब आवेंगे संकट के दिन कह दो, तब न भुलाओगे।।''[23]

''प्रेमी प्रिय के संपूर्ण जीवन-क्रम के सतत् साक्षात्कार का अभिलाषी होता है।''[24] नेपालीजी भी अपने प्रिय का सतत् साहचर्य चाहते हैं-

''जिंदगी के सफर में चलो साथ दो,
कामना की लहर में डुबो रात दो
दो नयन में नयन, हाथ में हाथ दो,
हाथ देकर न ऊँगली छुड़ाया करो।।''[25]

''प्रेमपूर्ण हृदय का विस्तार संपूर्ण सृष्टि तक हो जाता है।''[26]

नेपाली भी जब 'बुलबुल' को अपना घोंसला बनाते देखते हैं तो उनका प्रेमपूर्ण हृदय खिल उठता है,बुलबुल के सहारे अपने भविष्य के सुन्दर सपनों के प्रति मुखर हो उठता है-

''वह सुंदर नीड़ रचेगी चुन-चुनकर खर लायेगी
सजनी, फिर कभी किसी दिन यह भी बैठी गायेगी
उसका संसार बसेगा उसका भी जीवन होगा
जग के इतने आँगन में उसका भी आँगन होगा।।''[21]

उन्हें दुनिया में सर्वत्र प्यार ही प्यार दीखता है -

''दुनिया के बाग-बगीचे सब हम देख रहे हैं घूम-घूम
हर रोज प्रेम की चर्चा है हर घड़ी प्यार की मची धूम।।''[28]

गोकि नेपाली की प्रेम-दृष्टि में अपेक्षित गहराई का अभाव है, फिर भी उसका विस्तार विलक्षण है। नेपाली सच्चे पंडित हैं तो इसलिए कि इन्होंने ''ढाई आखर प्रेम का'' पढ़ा है, पचाया है। अगर स्नेह-सलिल से संचित न हो, तो जीवन की जमीन बंजर हो जाएगी। ''कवि प्रकृति और प्रेम की प्रतिष्ठा में यूँ ही नहीं लगा है। उसका पवित्र उद्देश्य है।।''[29]

नेपाली जी का प्रेम-वर्णन बहुआयामी है। उसमें प्रेम के कई रूप मिलते हैं। उसमें प्रकृति-प्रेम भी है, मानव-प्रेम भी, ईश्वरीय-प्रेम या भक्ति भी है ,देश-प्रेम भी, राष्ट्रभाषा प्रेम भी है और संस्कृति-प्रेम भी। प्रकृति-प्रेम नेपाली जी के काव्य की प्रमुख विशेषता मानी जाती रही है । यहां तक कि उन्हें ''प्रकृति का प्रतिनिधि और अकेले संपूर्ण कवि''[30] माना गया है। इन्होंने प्रकृति की विविध चित्रावलियों से साहित्य-संचिका को सुशोभित किया है । प्रकृति आद्योपांत उनके काव्य-सृजन को आच्छादित किये हैं। उनकी कविता का लगभग अर्धांश प्रकृति को समर्पित है। इनके काव्य में प्रकृति के एक-से-एक स्वाभाविक चित्र मिलते हैं। कुछ चित्र द्रष्टव्य हैं-

''पीपल के पत्ते गोल-गोल कुछ कहते रहते डोल-डोल
जब-जब आता पंछी तरु, जब-जब जाता पंछी उड़कर जब-जब
खाता फल चुन-चुनकर पड़ती जब पावस की फुहार,

बजते जब पंछी के सितार बहने लगती शीतल बयार
तब-तब कोमल पल्लव हिल-डुल,गाते सर्सर,मर्मर मंजुल
लख-लख,सुन-सुन विह्वल बुलबुल
बुलबुल गाती रहती चह-चह,सरिता गाती रहती
बह-बह पत्ते हिलते रहते रह-रह।।''[31]

मानव-प्रेम नेपाली के प्रेम का एक अन्य रूप है। वे मानव की समानता के पक्षधर थे -

''मकान हो, मनुष्य पाँव तो पसार रह सके
कि वस्त्र हो कि जिन्दगी सजा संवर रह सके
स्वतंत्रता रहे कि दर्द लिख सके कि कह सके
विधान हो कि राज भी कभी नहीं सके सता
मनुष्य माँगता यही, मनुष्य यही मानता
कि हो समाज राज में मनुष्य की समानता।।''[32]

नेपालीजी के काव्य में अभिव्यक्त प्रेम का एक रूप 'ईश्वरीय प्रेम' या 'भक्ति' भी है। उनकी मान्यता है कि ईश्वर प्रकृति के कण-कण में अंतर्निहित है। संपूर्ण सृष्टि उसी की छाया-प्रतिच्छाया है-

'जीवन की कृश काया पर यह सुषमा का आवरण तुम्हारा
नील नग्न इस गगन अंग पर तारों का आभरण तुम्हारा
प्राची देश में उठा बालरवि, नभ में उड़े किरण के पंछी
निर्मलजल पर खिले कमल-दल,
कमल-कमल पर चरण तुम्हारा।।'[33]

नेपालीजी के प्रेम का एक अन्य रूप देश-प्रेम है। देश-प्रेम इनके काव्य में अत्यंत प्रखरतम रूप में अभिव्यक्त हुआ है। वे राष्ट्र को सबसे ऊपर मानते हैं और स्वयं के कविकर्म को भी देशहित सम्बद्ध मानते हैं -

हुआ देश की खातिर जनम है हमारा
कि कवि हैं तड़पना करम है हमारा
कि कमजोर पाकर मिटा दे न कोई
इसी से जगाना धरम है हमारा ।।[34]

निष्कर्षतः नेपालीजी के काव्य का विस्तृत अनुशीलन करने पर हम पाते हैं कि उनके काव्य में उपलब्ध प्रेम के कई आयाम हैं। प्रेम के जितने रूप हो सकते हैं नेपालीजी ने सबका समावेश किया है। उसमें रूप है, सौंदर्य है, प्रकृति है, देश है, मानव है, ईश्वर है और वह सबकुछ जिससे प्रेम किया जा सकता है, जिससे प्रेम हो सकता है। भले ही कहीं-कहीं भावातिरेक में कवि ने प्रेम में हल्केपन का परिचय दिया है। लेकिन प्रेम के संस्पर्श मात्र से मानवीय वासना प्रेममय हो जाती है, प्रेम का एक रूप हो जाती है, स्वयं प्रेम हो जाती है और तब वह निंदनीय नहीं वरन् स्वीकार्य हो जाती है। जैसे समुद्र में मिलते ही नदी की स्वतंत्र सत्ता समाप्त हो जाती है, नदी विलीन हो जाती है और सिर्फ समुद्र रह जाता है, ठीक वैसे ही प्रेमाभाव में वासना निंदनीय होती है किन्तु प्रेमस्नात वासना, वासना न होकर स्वयं प्रेम हो जाती है और तब वह भले ही समाज की कसौटी पर गर्हनीय हो, प्रेम की कसौटी पर ग्राह्य है। अतः हम कह सकते हैं कि नेपालीजी ने प्रेम को उसकी सम्पूर्णता में अभिव्यक्त किया है। उनका प्रेम के प्रति सहज आकर्षण है। यह आकर्षण वासनाजन्य नहीं वरन अनुभवजन्य है। उन्होंने अपने जीवनानुभवों से प्रेम का महत्त्व पहचाना है, उसकी अनिवार्यता को पूरी शिद्दत से महसूस किया है और स्वयं अपने जीवन-संग्राम का विकट पथ प्रेम का पाथेय लेकर तय किया है। इसलिए वे प्रेम के प्रभाव को जानते हैं। प्रेम के प्रति उनकी धारणा स्पष्ट है। उनकी नजर में प्रेम से बढ़कर न तो कोई पुण्य है,यश है,धन-संपदा है और न ही कोई तीर्थयात्रा, बल्कि उनकी प्रेम ही 'परम-ब्रह्म' है, ईश्वर है इसलिए वे दृढ़ संकल्पित होकर कहते हैं -

''चाहे करूँ न पुण्य जनम भर,मिले न यश जग में अक्षय
चाहे कर पाऊँ न यहाँ मैं, सोने-चाँदी का संचय
किन्तु,जहाँ भगवान प्रेम की होती है पूजा सविनय
करूँ तीर्थ-यात्रा उस जग की, यह मेरे तन का निश्चय।।''[35]

संदर्भ :

1. नौका-विहार,शीर्षक कविता,उमंग,संपादक- नंदकिशोरनंदन,राजदीप प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण-2011,पृ.-66
2. प्रेम, शीर्षक कविता,उमंग,संपादक- नंदकिशोरनंदन,राजदीप प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण-2011,पृ.-2
3.जीवन-संगीत,शीर्षक कविता,उमंग,संपादक- नंदकिशोरनंदन,राजदीप प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण-2011,पृ.-32-33
4.वंदगी,शीर्षक कविता,रागिनी,संपादक- नंदकिशोरनंदन, राजदीप प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण-2011,पृ.-16
5. चहक, पंछी,संपादक- नंदकिशोरनंदन,पुस्तक भवन,नई दिल्ली,संस्क. 2011,पृ.55
6. दूर जाकर न कोई बिसरा करे,शीर्षक कविता, गोपाल सिंह नेपाली-समग्र,भाग-1, सं-सविता सिंह नेपाली, प्रकाशक-गोपाल सिंह नेपाली फाउण्डेशन, बेतिया(प. चम्पारण), प्रथम संस्करण-2010, पृ.-602
7. उग आया गगन में वही चाँद,शीर्षक कविता,नीलिमा,संपादक-नंदकिशोरनंदन,पुस्तक भवन,नई दिल्ली, संस्करण-2011,पृ.-55
8.रूप-दीप,शीर्षककविता,पंचमी,संपादक-नंदकिशोर नंदन, साहित्य संसद,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण-2011,पृष्ठ-41
9. सौंदर्य तुम्हारा सूर्योदय,शीर्षक कविता, गोपाल सिंह नेपाली-समग्र,भाग-1, सं-सविता सिंह नेपाली, प्रकाशक-गोपाल सिंह नेपाली फाउण्डेशन, बेतिया(प. चम्पारण), प्रथम संस्करण-2010, पृ.-592
10. चुनरिया झूठी है, शीर्षक कविता, गोपाल सिंह नेपाली-समग्र,भाग-1, सं-सविता सिंह नेपाली, प्रकाशक-गोपाल सिंह नेपाली फाउण्डेशन, बेतिया(प. चम्पारण), प्रथम संस्करण-2010, पृ.-593
11. सुन्दर का ध्यान कहीं सुन्दर,शीर्षक कविता, गोपाल सिंह नेपाली-समग्र,भाग-1,सं-सविता सिंह नेपाली, प्रकाशक- गोपाल सिंह नेपाली फाउण्डेशन, बेतिया(प. चम्पारण), प्रथम संस्करण-2010. पृ.-603
12.रवीन्द्रउपाध्याय,आलेख-'उमंग'-प्रकृति,प्रेम और पौरुष की जीवंत कविताएं, नेपाली:चिन्तन-अनुचिन्तन, संपादक-सतीश कुमार राय, समीक्षा प्रकाशन,दिल्ली/ मुजफ्फरपुर,प्रथम संस्करण-2009,पृ.-245
13. मैं प्यार माँगता हूँ,शीर्षक कविता,पंचमी,संपादक-नंदकिशोर नंदन, साहित्य

ISSN 2231-0479
peer-reviewed (refereed) journal

संसद,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण-2011,पृष्ठ-10।
14. दबे पाँव तुम आईं रानी, शीर्षक कविता,नीलिमा,संपादक- नंदकिशोरनंदन,पुस्तक भवन,नई दिल्ली, संस्करण-2011,पृ.-49
15.पदध्वनि, शीर्षक कविता,रागिनी,संपादक- नंदकिशोरनंदन, राजदीप प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण-2011,पृ.-20
16. इस तरह उचककर तुम न डरो,शीर्षक कविता,नीलिमा,संपादक- नंदकिशोरनंदन,पुस्तक भवन,नई दिल्ली, संस्करण-2011,पृ.-4।
1।. मैं प्यार चुराता चला गया अंधियारे में, शीर्षक कविता, गोपाल सिंह नेपाली-समग्र,भाग-1, सं-सविता सिंह नेपाली, प्रकाशक-गोपाल सिंह नेपाली फाउन्डेशन, बेतिया(प. चम्पारण), प्रथम संस्करण-2010, पृ.-621
18. दो तुम्हारे नयन,शीर्षक कविता, गोपाल सिंह नेपाली-समग्र,भाग-1, सं-सविता सिंह नेपाली, प्रकाशक-गोपाल सिंह नेपाली फाउन्डेशन, बेतिया(प. चम्पारण), प्रथम संस्करण-2010, पृ.-598
19. रैन-बसेरा, शीर्षक कविता,रागिनी,संपादक- नंदकिशोरनंदन, राजदीप प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण-2011,पृ.-52
20. अंतरा,शीर्षक कविता,रागिनी,संपादक- नंदकिशोरनंदन, राजदीप प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण-2011,पृ.-14
21. मैं विद्युत में तुम्हें निहारूँ,शीर्षक कविता,नीलिमा,संपादक- नंदकिशोरनंदन,पुस्तक भवन,नई दिल्ली, संस्करण-2011,पृ.-51
22. पतझड़ में भी आना,शीर्षक कविता,पंचमी,संपादक-नंदकिशोर नंदन,प्रकाशक-साहित्य संसद,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण-2011,पृष्ठ-59
23.वचन, शीर्षक कविता,उमंग,संपादक- नंदकिशोरनंदन,राजदीप प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण,2011,पृ.-9।
24.रामचंद्र शुक्ल,श्रद्धा-भक्ति,चिन्तामणि(पहला भाग),प्रकाशक-लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद,चतुर्थ संस्करण, 2004, पृष्ठ-11
25.दिल चुराकर न हमको भुलाया करो, शीर्षक कविता, गोपाल सिंह नेपाली-समग्र,भाग-1, सं-सविता सिंह नेपाली, प्रकाशक-गोपाल सिंह नेपाली फाउन्डेशन, बेतिया(प. चम्पारण), प्रथम संस्करण-2010, पृ.-60।
26. 'इक लफ्जे-मुहब्बत का अदना ये फसाना है सिमटे तो दिल के आशिक, फैले तो जमाना है।।' जिगर मुरादाबादी : मोहब्बतों का शायर, सम्पादक-निदा फाजली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-199।, पृष्ठ-37
27. जीवन,शीर्षक कविता,उमंग,संपादक- नंदकिशोरनंदन,राजदीप प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण-2011,पृ.-23
28.खेतों की चादर हरी-हरी, शीर्षक कविता,नीलिमा,संपादक- नंदकिशोरनंदन,पुस्तक भवन,नई दिल्ली, संस्करण-2011,पृ.-46
29.रवीन्द्र उपाध्याय,आलेख-'उमंग'-प्रकृति,प्रेम और पौरुष की जीवन्त कविताएँ,नेपाली = चिन्तन-अनुचिन्तन, संपादक-सतीश कुमार राय, प्रकाशक-समीक्षा प्रकाशन,दिल्ली/मुजफ्फरपुर,प्रथम संस्करण,2009,पृ.-24।
30. गोपाल सिंह नेपाली : प्रतिनिधि कविताएँ, भूमिका,संपादन-सतीश कुमार राय,राजकमल पेपरबैक्स,नई दिल्ली,पहला संस्करण-2009, पृ.-6
31. पीपल,शीर्षक कविता,उमंग,संपादक- नंदकिशोरनंदन,राजदीप प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण-2011,पृ.-33
32. मनुष्य की समानता,शीर्षक कविता, हिमालय ने पुकारा, संपादक-नन्दकिशोर नंदन, प्रकाशक- साहित्य संसद,नई दिल्ली, संस्करण-2011,पृष्ठ- ।8
33. वंदनागीत, शीर्षक कविता,पंचमी,संपादक-नंदकिशोर नंदन,प्रकाशक-साहित्य संसद,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण-2011,पृष्ठ-30
34. नजर है नई तो नज़ारे पुराने, शीर्षक कविता,हिमालय ने पुकारा, संपादक-नन्दकिशोर नंदन, प्रकाशक- साहित्य संसद,नई दिल्ली, संस्करण-2011,पृष्ठ-85
35. निश्चय,शीर्षक कविता,उमंग,संपादक- नंदकिशोरनंदन,राजदीप प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण-2011,पृ.-21

शोध पत्र लेखन के लिए दिशा-निर्देश

शोध पत्रिका 'समागम' शोध की मासिक पत्रिका है और देश के सभी हिस्सों से स्कॉलर, शिक्षक एवं बुद्धिजीवी जुड़े हुए हैं. यह हमारे लिए प्रसन्नता की बात है. कोशिश होती है कि शोध लेखों की मान्य परम्परा का निर्वहन किया जाए. बावजूद इसके कुछ त्रुटियां रह जाती हैं. इन त्रुटियों से मुक्ति पाने के लिए आग्रहपूर्वक शोध पत्र लेखन के लिए हम दिशा-निर्देश का उल्लेख कर रहे हैं. इस दिशा-निर्देश का समुचित पालन करने से शोध आलेखों की गुणवत्ता में विस्तार होगा.

1. शोध पत्र के आरंभ में शोध सार, शब्द संकेत एवं प्रस्तावना के साथ निष्कर्ष प्रस्तुत करना चाहिए.

2. प्रत्येक शोध पत्र के अंत में इंटरनेशनल लायब्रेरी सिस्टम के मानक के अनुरूप संदर्भ प्रस्तुत किया जाना चाहिए. मसलन, किसी लेखक के नाम के पहले लेखक का सरनेम अथवा प्रचलित उपनाम लिखा जाना चाहिए.

3. शोध आलेख के अंत में संदर्भ में केवल संदर्भ के नाम पर किसी किताब या लेखक के नाम का उल्लेख कर दिया जाता है, वह अनुचित है. संदर्भ में पुस्तक का शीर्षक, लेखक, प्रकाशक, प्रकाशन स्थान, पृष्ठ संख्या, प्रकाशन वर्ष का उल्लेख किया जाना चाहिए. इंटरनेट से उल्लेखित संदर्भ में साईट का विवरण एवं पोस्ट किए गए समय एवं तारीख, वर्ष का भी उल्लेख किया जाना चाहिए.

4. प्रयास हो कि शोध पत्र अधिकतम दो हजार शब्दों में लिखा हो. कदाचित शब्द सीमा में शोध की परिकल्पना पूर्ण नहीं हो पाता है तब विस्तार दिया जाना उपयुक्त होगा.

5. शोधार्थी अपना पूर्ण विवरण यथा नाम, पदनाम, संस्था के साथ गाईड का भी विवरण प्रस्तुत करे. साथ में सम्पर्क के लिए मोबाइल नम्बर, ई-मेल एड्रेस एवं डाक का पता भी लिखा जाए.

6. शोध आलेख के साथ स्व-रचित एवं मौलिकता का प्रमाण-पत्र संलग्न करना अनिवार्य है. प्लेगरिज्म में कोई प्रकरण बनता है तो इसके लिए शोधार्थी/लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा.

7. शोध आलेख मंगल/यूनिकोड अथवा कृतिदेव फांट में प्रेषित किया जा सकता है.

8. टीम समागम का प्रयास होता है कि वह अपने स्तर पर आपके द्वारा प्रेषित शोध आलेख का पठन-पाठन कर गलतियों में सुधार करे. ऐसा करने के पश्चात शोधार्थी को पुनः प्रूफरीडिंग के लिए पीडीएफ फाइल भेजी जाती है. यह समस्त प्रक्रिया प्रूफ की गलतियों से मुक्ति के लिए है.